हिन्दी : कल, आज और कल

डॉ0 आर0 के0 मेहरा, डी. लिट्.
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय महिला महाविद्यालय,
अम्बाला शहर (हरियाणा)

इतिहास साक्षी है, कि जिस देश की अपनी भाषा है, उसी देश ने दुनिया में अपना डंका बजाया है। हर देश तरक्की पाने के लिए अपनी भाषा को आगे ला रहा है और विश्व बाजारीकरण में अपनी पैठ बनाने के लिए विदेशी भाषा को ज्ञान के तौर पर रख कर, बाकी सब जगह से नकार रहा है। वह अपनी सभ्यता को दुनिया के हर कोने में ले जाना चाहता है। ऐसा तभी संभव होगा जब वह अपनी भाषा का विस्तार दुनिया को समझाने में बढ़ाए और उन्हें अपनी भाषा सिखलाए।

लेकिन हमारे देश के कुछ नेताओं की बजह से एक–दो राज्यों में तो सरकारी तौर पर हिन्दी पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है और अंग्रेजी को सरकारी तौर पर मान्यता प्रदान की गई है। अगर यहां पर सिर्फ उनकी मातृभाषा का सवाल होता तो ठीक था लेकिन वे हिन्दी का त्याग करके विदेशी भाषा को सरकारी तौर पर मान्यता प्रदान कर कैसे पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य कर सकते हैं ? सम्पूर्ण राष्ट्र में एक भाषा का ना होना हमारे देश के सर्वांगीण विकास में बाधा है क्योंकि हमारे ही देश में अधिकतर नागरिकों द्वारा बोली और समझी जाने वाली हिन्दी की इज्जत नहीं होगी ,तो विदेशों में इसके विस्तार की क्या उम्मीद की जा सकती है?

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय संविधान में आज 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है और सभी का अपना लोक साहित्य है। लोक साहित्य ही वास्तव में लोक संस्कृति का परिचायक होता है। लोक संस्कृतियों का मिश्रण ही भारतीय संस्कृति का मूल है। कहा भी गया है– **अनेकता में एकता भारत की विशेषता**। आज जो हिन्दी भाषा है वास्तव में यह खड़ी बोली है, जिसमें सबसे पहले अमीर खुसरो ने अपनी पहेलियां लिखी। संत–साहित्य में भी लोक भाषाओं और उर्दू के साथ खड़ी बोली का प्रयोग हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी के अथक प्रयासों से खड़ी बोली हिन्दी भाषा के रूप में साहित्यिक भाषा बन पायी।

निःसन्देह जितना अधिक किसी भाषा का प्रचार–प्रसार होगा, उतना ही अधिक उस देश की लोक संस्कृति का भी प्रचार–प्रसार होना यथासंभव है। भारतवर्ष में हिन्दी भाषा के संदर्भ में यह बात बिल्कुल सटीक बैठती है। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति की अभिन्न पहचान है। 'हिन्दी भारत के चिन्तन व दर्शन का मूल स्रोत है। इसी के द्वारा भारत की सभ्यता को परखा जा सकता है।'[1]

इस ओर कदम बढाते हुए मोदी सरकार ने अपने पहले ही पखवाड़े में केन्द्र सरकार के कार्यालयों के लिए सर्कुलर निकाला कि सोशल मीडिया में हिन्दी का उपयोग होना चाहिए। जिसका सीधा–सा अर्थ था कि पूरे भारतवर्ष में सरकारी कार्यालयों के माध्यम से हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना। 60 के दशक में भी गृह मंत्रालय की ओर से अंग्रेजी से हिन्दी की ओर जाने के लिए वे निर्देश जारी किए थे जो भारतीय संविधान में हैं। लेकिन तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू दक्षिण राज्यों के दंगों के कारण व एक व्यक्ति के आत्मदाह करने से बहुत दुःखी हुए और 1963 में नेहरू जी ने कहना पड़ा कि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों पूरे देश में सम्पर्क भाषा के रूप में जारी रहेंगी। आज 60 के दशक जैसे दंगों की स्थिति तो नहीं हुई लेकिन गैर–हिन्दी राज्यों के विरोध के स्वर आने शुरू ही हुए थे कि मोदी सरकार ने अपने कदम वापिस लेने पड़े और कहना पड़ा कि यह सर्कुलर सिर्फ हिन्दी भाषी राज्यों के लिए था। लेकिन भारतवासियों के लिए यह बात भी गर्व की है कि पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के बाद कल प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारतीय भाषा हिन्दी में अपना भाषण दिया।

आज हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित करने में संचार और प्रौद्योगिकी ने अहम योगदान दिया है। जिसमें रेडियो, टेलीविजन, हिन्दी फिल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापनों की विशेष भूमिका रही है। भारत में बनने वाली हिन्दी फिल्में और धारावाहिक विदेशों में बहुत लाकप्रिय हो रहे हैं, जो हिन्दी भाषा का वैश्वीकरण करने तथा हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इस संदर्भ में यह कथन उल्लेखनीय है–'मनोरंजन उद्योग के ग्लोबल बाजार ने बताया है कि बॉलीवुड की फिल्मों और गानों की धुनों को जो लोग भाषा की दृष्टि से नहीं समझते, वे भी उसकी संस्कृति, संरचनाओं के प्रभाव में रहते हैं। वे स्पेनिश, फ्रैंच, जापानी या चीनी बोलने वाले हो सकते हैं, मगर हिन्दी फिल्में पसंद करते हैं। जाहिर है, कुछ हिन्दी शब्द इस बहाने उनके पास रह जाते हैं।'[2]

हिन्दी न्यूज चैनल्ज जो चौबसों धण्टे देश–विदेश में हाने वाली हर घटना का प्रसारण कर रहे हैं, उससे भी पूरे भारतवर्ष के साथ–साथ विदेशों में भी हिन्दी का प्रचार–प्रसार हो रहा है। कई निजी चैनलों पर हिन्दी भाषा से सम्बद्ध कार्यक्रम समय–समय पर करवाए जाते हैं, जो हिन्दी की महत्ता को बताने व उसे वैश्विक स्तर पर स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इसके अतिरिक्त आज कई प्रमुख हिन्दी समाचार–पत्र और पत्रिकाओं की अपनी वेब साइटें उपलब्ध हैं जो हिन्दी भाषा की उपस्थिति इंटरनैट के माध्यम से भी विश्व पटल पर दर्ज करवा रही है और हिन्दी भाषा की गरिमा को चार चॉद लगा रही है।

मीडिया के साथ–साथ भूमण्डलीकरण विशेषतः बाजारवाद ने भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया है। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा बाजार बन रहा है। अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां अपने कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित कर रही हैं और हिन्दी भाषी अनुभवियों को नौकरी पर रखा जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक लोगों के बीच अपने उत्पादनों को बेच सकें। भारत में ही नहीं अमेरिका, इंग्लैंड, जापान, चीन, रूस, जर्मनी और कोरिया जैसे कई देशों में हिन्दी पढ़ने–पढ़ाने का काम चल पड़ा है। विश्व में 40 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक जरूरतों को पूरा करने के लिए के हिन्दी पढ़ाई जाती है। समय–समय पर भारत से हिन्दी शिक्षकों की भर्ती के लिए आवेदन मांगे जाते हैं और अनुभवी हिन्दी शिक्षक विदेशों में रोजगार के साथ–साथ हिन्दी को विश्व में फैलाने में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं।

आधुनिक युग में कोई भी राष्ट्र विज्ञान की परिधि से बाहर नहीं है, बल्कि उसके लिए यह अति आवश्यक है कि वह विज्ञान की खोज में अपना योगदान दें। यह सत्य है कि प्रत्येक राष्ट्र अपना कार्य अपनी भाषा में करें, तभी उस राष्ट्र की प्रगति संभव है। लेकिन विज्ञान और तकनीकी की उन्नति भाषा के बन्धनों से मुक्त होनी चाहिए। किन्तु यह भी सत्य है कि 'इस विज्ञान के युग में यदि किसी भाषा में विज्ञान की शब्दावली का विकास नहीं होता, तो वह भाषा अपनी शक्ति व मूल्य खो देगी।'[3]

पिछले कुछ दशकों से संसार में नई दिशाओं में नए–नए विचारों का सृजन हो रहा है। अनुवाद कार्य के माध्यम से हिन्दी की पैठ इन दिशाओं में भी हो रही है। विदेशी भाषाओं में छपी विज्ञान व तकनीकी की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद होने लगा है, जिससे यह ज्ञान विज्ञान और तकनीकी के छात्रों की पहुॅच में आसानी से आ चुका है। अनुवाद के साथ–साथ हिन्दी में विज्ञान और तकनीकी के नए शब्दों का निर्माण निरंतर हो रहा है। 'हिन्दी में 12 लाख वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों की रचना हो चुकी है और यह निर्माण निरंतर चल रहा है।'[4] इंटरनैट पर कंटेन्ट राइटिंग और अनुवाद के लिए भी हिन्दी के विशेषज्ञों की मांग बढ़ी है।

संचार एवं प्रोद्यौगिकी के इस युग में प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवा ली है। यदि ये कहा जाए कि कम्प्यूटर मानव–जीवन का अभिन्न अंग बनता जा रहा है तो कोई अन्योक्ति नहीं होगी। माना कि आरम्भ में टंकण कार्य के लिए ही कम्प्यूटर का प्रयोग होता था और वह भी केवल अंग्रेजी भाषा में किया जाता था, परन्तु आज हर कार्य में कम्प्यूटर अनिवार्य बनता जा रहा है। विश्व बाजार में हिन्दी की बढ़ती मांग व इसकी मजबूत वैश्विक स्थिति के कारण आज कई हिन्दी सॉफ्टवेयरों का निर्माण हो चुका है। विभिन्न सॉफ्टवेयर कंपनियां हिन्दी में लोकप्रियता हासिल करने के लिए भाषाविदों को अपने यहां अवसर मुहैया करा रही हैं। गूगल और याहू जैसी कंपनियां भी अपने यहां हिन्दी में स्तरीय सामग्री उपलब्ध कराने में जुटी है। अतः हिन्दी विश्वमंच पर वैबसाइट के रूप में स्थापित हो चुकी है।

हिन्दी विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र के साथ–साथ वाणिज्य के क्षेत्र में भी विकसित हो रही है। भूमण्डलीकरण और उदारीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियां विज्ञापन के रूप में अपने उत्पादनों को बेचने के लिए हिन्दी को अपना रही हैं अर्थात हिन्दी विश्वबाजारवाद की भाषा बन रही हैं। विश्वभर में विश्वभाषाओं के अध्ययन की यदि तुलनात्मक परीक्षा करें, तो हम पाते हैं कि सर्वाधिक रुचि हिन्दी में है।[5]

समय–समय पर 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' का आयोजन किया जाना केवल हिन्दी का प्रचार–प्रसार ही नहीं बल्कि हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित करना और सुदृढ़ता प्रदान करना ही है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा 1975 में नागपुर में करवाया गया प्रथम 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित करने के लिए किया गया एक सफलतम प्रयास था, जिसमें केवल भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों, समाज सेवी संस्थाओं, नागरिकों, प्रवासी भारतीयों ने ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य कई देशों ने भी भाग लिया। उसके बाद से ही इस प्रकार के प्रयास निरंतर जारी है। अब तक कुल नौ 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' का आयोजन हो चुका है जिन्हें आयोजित करने में केवल भारत और हिन्दी भाषी देशों ने ही नहीं, अन्य यूरोपीय देशों ने भी रुची दिखाई है। यह विश्व में हिन्दी की मजबूत होती हुई स्थिति के कारण ही संभव हो रहा है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि कल की बजाय आज हिन्दी की स्थिति भारतवर्ष में सुदृढ़ है। और भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और विश्व बाजारीकरण के दौर में हिन्दी केवल भारत की भाषा न रहकर विश्व की भाषा बन रही है। अतः आज की परिस्थितियों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि आने वाला कल हिन्दी का होगा, भारत का होगा।

संदर्भ :–

1. लल्लन प्रसाद व्यास–हिन्दी की विश्व यात्रा भारत से मॉरीशस तक, पृ0–39
2. सं0 डॉ0 दिनेश चमोला–'विकल्प' जनसंचार विशेषांक, अप्रैल–जून, 2008 पृ0–19
3. विश्वमोहन तिवारी–'विज्ञान और प्रौद्योगिकी के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र भाषाओं की संभावनाएं, पृ0–12
4. वही, पृ0–9
5. दैनिक ट्रिब्यून, चण्डीगढ़, 24 सितम्बर, 2006